तन्हाई

इश्क़ का हासिल

{ग़ज़लें व नज़्में}

आशीष राज सिंघानियाँ 'तन्हा'

ॐ साई राम

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-19927-18-0

Price: 175.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

॥ श्री ॥

तन्हाई

इश्क़ का हासिल

ग़ज़लें व नज़्में

आशीष राज सिंघानियॉ
'तन्हा'

शुक्रिया

मेरी हमसफर 'दीप्ति' और
मेरे उन तमाम मित्रों का
तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूँ,
जिन्होंने मुझे हमेशा
'ख़ास' होने का एहसास कराया.
मुझे हौसला दिया
कुछ बेहतर करने का, लिखने का,
या साफ शब्दों में कहूँ तो
ज़िंदगी जीने का.
आप सब अगर मेरी
जिंदगी में न होते, तो मैं शायद
कुछ और भी लिख पाता,
लेकिन आप सब ने मेरा दर्द बांटकर
मेरे अल्फ़ाज कम कर दिये.

समर्पण

यह किताब
मेरे पूज्य दादाजी
स्व. श्री चिरंजीवलाल जी सिंघानियॉ
एवं
मेरे लिए ग़ज़ल के पर्याय
स्व. श्री जगजीत सिंह जी
को सादर समर्पित है.

- आशु

प्रस्तावना

कहते है दर्द में आवाज़ नहीं होता, पर मैं इसे गलत मानता हूँ और शायद आप भी मानने लगेंगे इस किताब में लिखी ग़ज़लों को पढ़ने के बाद. हिन्दी व उर्दू दोनों ही भाषाओं में बराबर पकड़ रखने वाले अत्यंत ही प्रतिभावन व युवा कवि ने दर्द को शब्दों में कुछ यूँ पिरोया है कि पता ही नहीं चलता कि ये ग़ज़लें-कविताएं हैं या पढ़ने वाले के दिल की आवाज़, एक-एक शब्दों में बेहद गहरा एहसास छुपा हुआ है.

इतनी कम उम्र में यूँ दर्द का बयान या तो खुद का कोई पीड़ादायक अनुभव है या कल्पनाओं का गहरा असर. बहुत सी उलाहनाओं के साथ, पछतावा भी साफ नज़र आता है...

तूने नफरत से जो देखा, तो मुझे याद आया
कितने रिश्ते तेरी ख़ातिर, यूँ ही तोड़ आया हूँ
कितने धूंधले हैं ये चेहरे, जिन्हें अपनाया हूँ
कितनी उजली थी वो आँखें, जिन्हें छोड़ आया हूँ

अठारह वर्ष की छोटी सी उम्र, मतलब जवानी की दहलीज़ में पहला कदम रखते ही, ऐसा क्या हुआ एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने वाले, एक सभ्रांत व्यवसायिक व राजनीतिक परिवार से ताल्लुक रखने वाले उस लड़के को, जो उसने प्यार और बेवफाई दोनों की बातें इतनी कम उ़म्र में ही कर डाली. आज तीस की उ़म्र में आते-आते यह कलमकार लगभग सौ से भी ज़्यादा ग़ज़ल-गीत व कविताएं लिख चुका है और मुझे ऐसा नहीं लगता कि और लिखने का उसका दर्द-ख़्वाब या ख़्याल ख़त्म हो चुका है.

अ़ज़ीब लगता है जब नवाबों की तरह ज़िंदगी बिताने वाले लोग फकीरी की बातें करते हैं, अगर ये कल्पनाएं हैं तो मैं मुरीद हूँ इस तन्हा और इसकी तन्हाई का, मगर ये ग़ज़लें ग़र हकीकत ज़िंदगी का तज़रुबा निकली तो मुझे तरस आता है इसके लेखक पर और उसके साथ हुई बेवफाई पर. ख़ैर हिम्मत चाहिए अपनी बर्बादीयों के किस्से सुनाने के लिए. मेरी दुवाएं है कि मालिक 'आशीष' पर रहमत बरसाए व ज़िंदगी के हर मुकाम पर बरक़त दें.

– अंकुर ॲरोरा (रायपुर)

लेखक परिचय

अविभाजित मध्यप्रदेश के दुर्ग जिले की धर्मनगरी थानखम्हरिया में आशीष राज़ सिंघानियाँ का जन्म 8 जून 1983 की अलसुबह 3 बजकर 25 मिनट में हुआ. पिता श्री आनंद सिंघानियाँ व माता श्रीमति सुशीला देवी के एकमात्र पुत्र आशीष की दो बहनें, बड़ी समता व छोटी अर्पिता हुई. बचपन से ही अत्यंत मेधावी व शरारती आशीष का मन कुछ अलग करने को करता रहा, मगर उनके सपने को पंख तब लगे, जब अच्छी शिक्षा हेतू सन् 1994 में इन्हें मध्य भारत के तब के प्रतिष्ठित आवासीय विद्यालय रायपुर स्थित रेडियंट पब्लिक स्कूल भेजा गया. वहाँ शिक्षा के साथ-साथ शुरु से ही इन्होंने संगीत व साहित्य में गहरी रुचि ली. जिसका परिणाम रहा कि जल्द ही वहाँ आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इनकी महती भूमिका रहने लगी. विद्यालय के डायरेक्टर श्री विकास अग्रवाल ने इनकी प्रतिभा व जिद को देखते हुए जल्द ही इनके नेतृत्व में 'रेडियंट बैंड' का सृजन किया. जिसमें विभिन्न वाद्य-यंत्रो को बजाते हुए इन्होंने अपने अंदर के कलाकार को जागृत किया.

कम उम्र में ही अपने मित्रों मयंक मल्होत्रा, कृष्णा अरोरा, शिल्पराज देवांगन आदि के साथ स्व. श्री जगजीत सिंह जी की ग़ज़लों को सुनते-सुनते उर्दू से इनको मोहब्बत हो गयी थी. शुरु-शुरु में उर्दू अल्फाज़ों को न समझ पाने वाला आशीष आगे चलकर एक मुकम्मल ग़ज़लकार व लेखक बनेगा, ये शायद ही किसी ने सोचा होगा.

इनके दर्द की बानगी देखिए...

किससे-किससे मोहब्बत करुँ और किसे-किसे जुदा करुँ,
अब इतनी इबादत करके मैं और किसे खुदा करुँ?

उम्र के साथ-साथ हाज़िर ज़वाबी व शेरों-शायरियां इनकी पहचान बन गयी. छोटी-छोटी कविताएं व फिल्मी गानों की पैरोडी करने वाला आशीष कब दर्दमंद हुआ और कब उसने उन दर्द को शब्दों में पिरोना शुरु किया, किसी को पता ही नहीं चला.

कल्पनाओं की हद देखिए...

तेरी मौजूदगी से कैसे मैं गाफ़िल रहा अब तक,
कि दूर दरिया से जैसे कोई साहिल रहा अब तक.

पिता की राजनीतिक पृष्ठभूमि ने ज़रुर इनकी उच्च शिक्षा की हसरतों में व्यवधान उत्पन्न किया फिर भी जैसे-तैसे इन्होंने अपना स्नातकोत्तर पूरा कर ही लिया. आज उम्र के तीस बसंत देख चुके आशीष जिस दर्द को कोस-कोस कर एक मुकम्मल ग़ज़लकार बनें, वही दर्द अब उनके जीवन भर का हासिल बन गया है. आप यकीन नहीं करेंगे प्यार-इश्क़ और मोहब्बत के घोर आलोचक आशीष खुद कब दिल लगा बैठे, किसी को एहसास ही नहीं हुआ. दुनिया में मोहब्बत के तमाम हश्र देखकर लोगों को उससे दूर रहने की नसीहत देने वाला अब खुद प्रेम-विवाह करके दर्द को फिर से अपना जीवनसाथी बना चुका है.

ख़ैर एक बात और है कि जिसने दर्द को इतनी सिद्दत से जिया है, अब दर्द भी उसका क्या बिगाड़ पाएगा. वैसे एक बहुत अच्छी बात अक्सर मैंने इनको कहते सुना है कि...

ज़िंदगी में अगर इश्क़ है तो ताउम्र रहे,
वरना या तो इश्क़ हीं न हो या ये ज़िंदगी हीं न रहे.

– हरि केडिया

कुछ इस तरह की कल्पनाएँ,
मुझे प्रेरित करती है लिखने के लिए...

लिपट कर अपने तकिये से,
जागता रहता हूँ मैं.
तमाम रात किसी की याद,
मुझे सोने नहीं देती.

उसकी कोई मासूम सी शरारत,
आती है याद.
उदास तो कर जाती है,
पर मुझे रोने नहीं देती.

लोग कहते हैं उसे भूलकर,
नयी ज़िंदगी शुरु कर.
वो रूह पर काबीज़ है,
मुझे किसी और का होने नहीं देती.

– अनजान

कुछ ग़ज़लें ऐसी बन पड़ती है कि,
हर पढ़ने वाले को लगता है कि
ये ग़ज़ल मेरे लिए ही लिखी गई है.
ऐसी ही एक ये ग़ज़ल है..
जो मेरी न होकर भी
मुझे मेरा ही महसुस होती है.
अगर यें ग़ज़लें न लिखी गई होती,
तो शायद ये किताब भी नही बन पाती.
क्यूंकि इन्हीं ग़ज़लों ने
मुझे उर्दू की समझ दी,
मुझे जीना सिखाया
और दिल से
मौत का खौफ़ खत्म किया.

हमेशा से मेरे आदर्श
'गुलज़ार साहब'
की पंक्तियां,
मेरी प्रेरणा भी है
और
मेरी ऊर्जा भी...

तन्हा

ज़िंदगी यूँ हुई बसर तन्हा,
काफिला साथ और सफर तन्हा.
अपने सायें से चौंक जाते हैं,
उम्र गुज़री है इस कदर तन्हा.
रात भर बोलते है सन्नाटे,
रात काटे कोई किधर तन्हा.
दिन गुज़रता नहीं है लोगों में,
रात होती नहीं बसर तन्हा.
हमनें दरवाजे तक तो देखा था,
फिर न जाने गए किधर तन्हा.
ज़िंदगी यूँ हुई बसर तन्हा,
काफिला साथ और सफर तन्हा.

– गुलज़ार

यह किताब क्यूँ...

सच कहूँ तो मुझे ज़ज़्बातों को छुपाकर रखना ही नहीं आता, अब ज़ज़्बात चाहे मोहब्बत के हो या दर्द के. मेरी यही साफगोई मेरे लिए कई बार परेशानी का सबब़ भी बन चुकी है, पर कर भी क्या सकता हूँ क्यूँकि जलना मेरी फितरत है और दर्द मेरा सबसे जिगरी दोस्त. मेरी पैदाईश के पीछे शायद खुदा का कोई खास मकसद है, तभी तो कायनात के सारे ग़म मेरे ही दामन में भर देना चाहता है. शायद हम जैसे दर्दमंदो के लिए ही **मिर्ज़ा ग़ालिब साहब** ने लिखा भी है कि...

दिल ही तो है न संग-ओ-ख़िस्त, दर्द से भर न आए क्यूँ?
रोएंगे हम हज़ार बार, कोई हमें सताएं क्यूँ?

पता नहीं दर्द से मुझे इतनी मोहब्बत क्यूँ है या कहो की दर्द को मुझसे. बड़ा अजीब सा महसूस होता है जब सीने में महबूब की यादों का कोई समंदर नही होता और आँखो में दर्द के बयान का सैलाब. बचपन से ही गीत-संगीत में बेहद दिलचस्पी रही, जिसका असर रहा कि अल्फ़ाजों से उलझने के पहले ही उसकी गिरहें खोलना सीख गया. मुझे सुकून है कि मैं अपनी उन तमाम उलझनो को बयां कर सका जो बरसों से सीने में अटकी हुई थी. इस किताब की एक-एक ग़ज़ल, उन ग़ज़लो के एक-एक अल्फ़ाज बेहद सिद्दत से लिखे गये है.

मैं अक्सर महसूस करता हूँ कि जब कभी कोई बरसों पुरानी यादें तड़पाती है या कोई अच्छी-बुरी वारदात घटती है तो दिल की बेचैनी तभी खत्म होती है जब उस वक्त या मसले पर कुछ लिख लेता हूँ. बहुत मुश्किल है अपने एहसासों को जाहिर करना, उनको मुकम्मल अल्फ़ाज देना. फिर भी पूरी ईमानदारी से मैने अपने तज़रुबों, एहसासो व ख़यालीं दर्द को बेहद करीने से इन ग़ज़लों व नज़्मों में पिरोया है. हाँ एक बात और, मैं अपनी इन छोटी आँखों से बहुत बड़े ख़्वाब देखा करता था कि एक दिन मेरी लिखी इन ग़ज़लों को महान ग़ज़ल गायक स्व. श्री जगजीत सिंह जी जरुर गाएंगे, पर मेरी हजारों ख़्वाहिशों की तरह यह ख़्वाहिश भी उनके मरहूम होते ही ज़मींदोज़ हो गयी.

मुझे पूरा यकीं है मेरी ग़ज़लों में आप सबको अपने दिल के दर्द का एहसास होगा, अपनी बीती जिन्दगी की यादें ताजा होंगी.

आखिरी में बस एक ही गुज़ारिश है कि आप तो कम से कम बेवफ़ा मेहबूब की तरह मत होना, आप मुझसे खूब मोहब्बत करना, वफ़ा करना. मेरी इस किताब को भरपूर प्यार देना, मुझे यह एहसास कराना कि मेरे जिंदा रहने के लिए अभी भी कई ज़ायज़ वज़हें हैं.

आपका हमसफर.. आपका हमसुख़न..

– आशीष राज सिंघानियॉ 'तन्हा'

विषय–सूची

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ क्रमांक
1	या मौला या मेरे हाज़ी	02
2	हम तो समझे थे	04
3	क्यों तुम किसी का	06
4	क्यों की हमने प्यार	08
5	ज़िंदगी हो तुमपे निसार	10
6	प्यार करने लगे	12
7	चले जाओ चाहे तुम	14
8	टूट गया हूँ मैं	16
9	तन्हाईयों पे अक्सर	18
10	रो रहा है मेरा मन	20
11	सोच के दहलते हैं	22
12	कहाँ था मैं	24
13	तन्हा ने झेली है	26
14	ये ज़िंदगी तेरी	28
15	तेरी मौजूदगी से	30
16	किस शख़्स की ख़ातिर	32
17	मेरे हालात की वज़ह	34
18	मुझे मालूम है तेरी	36
19	दुज़दीदा ही सही	38
20	क्यूँ ख़्याल अब	40
21	तूने नफरत से जो देखा	42
22	किससे किससे मोहब्बत	44
23	वो तेरी हर शरारत	46
24	क्यूँ सोचता हूँ	48

तन्हाई

इश्क़ का हासिल

आशीष राज सिंघानियाँ

'तन्हा'

facebook.com/poet.tanha

twitter.com/poet_tanha

singham.ashu@gmail.com

कहते है दर्द में आवाज़ नहीं होता, पर मैं इसे गलत मानता हूँ और शायद आप भी मानने लगेंगे इस किताब में लिखी ग़ज़लों को पढ़ने के बाद. हिन्दी व उर्दू दोनों ही भाषाओं में बराबर पकड़ रखने वाले अत्यंत ही प्रतिभावन व युवा कवि ने दर्द को शब्दों में कुछ यूँ पिरोया है कि पता ही नहीं चलता कि ये ग़ज़लें–कविताएं हैं या पढ़ने वाले के दिल की आवाज़.

FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE

Flipkart GET IT ON Google Play

amazon amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-81-19927-18-0

9 788119 927180